शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

प्रकाशन

मैत्रेयी पुष्पा स्त्री अस्मिता के महासमर में संघर्ष करने वाली महान योद्धा हैं।

डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह

असि०प्रो०, हिन्दी विभाग,
डी०ए-वी० कॉलेज, कानपुर
(उत्तर प्रदेश)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

मैत्रेयी पुष्पा स्त्री अस्मिता के महासमर में संघर्ष करने वाली महान योद्धा हैं।

– डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह

मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य
संपादक : डॉ० दया दीक्षित
प्रकाशक : सामयिक बुक्स
3320-21,जटवाड़ा,
दरियागंज, नई दिल्ली
पृष्ठ : 304
मूल्य : 495/-
ISBN: 978-93-80458-12-0

रचना और रचनाकार साहित्य शोध के महत्त्वपूर्ण विषय हैं। एक रचनाकार समाज के अनुभवों की थाती से अपनी एक अलग दुनिया सिरजता है, उसक अपने भावलोक होते हैं, समय और विचार को देखने के उसके अपने आलोचना विवेक और उसके निजी विवेक–निष्कर्ष में सभी फलीभूत हाते हैं, उसकी अपनी रचनाओं में। रचना कला के धर्म का निर्वाह करती है और रचनाकार सामाजिक उत्तरदायित्त्व का। रचना में रचनाकार और रचनाकार में रचना को ढूंढ़ना कई बार अनुचित प्रतीत होने लगता है तो कई बार अनावश्यक है। जब किसी रचनाकार की रचना केवल कला के धर्म के निर्वाह के लिए सृजित होती है तो वहाँ रचनाकार का पार्श्व गैर जरूरी हो जाता है और जब सामाजिक दायित्वबोध की फलश्रुति होती है तो रचनाकार का व्यक्तित्त्व और रचना से तर्क संगति अनिवार्य हो जाती है। रचना और रचनाकार का एक बिन्दु पर विश्लेषण और दोनों में रचनागत ईमानदारी की उपस्थिति रचनाकार को अधिक विवेकशील जिम्मेदार और ईमानदार बनाता है। डॉ0 दया दीक्षित द्वारा संपादित ग्रंथ 'मैत्रयी पुष्पा: तथ्य और सत्य' मैत्रेयी पुष्पा के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व को एक व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण भावभूमि पर प्रतिष्ठित करता है। यह संपादन इन अर्थों में भी महत्त्वपूर्ण है कि मैत्रेयी पुष्पा की संवदेना से रूबरू होने वाले उनके अपने स्त्री आलोचकों के पक्ष है, साथ ही उनकी दृष्टि के पारखी उनके पुरुष प्रतिपक्ष भी हैं। समकालीन समीक्षकों एवं विचारकों का यह संकलन स्त्री दशा–दिशा की समय परीक्षा करता है और समकालीन स्त्री विमर्श की प्रासंगिकता को अनावृत करता है। स्त्री विमर्श को सही संदर्भों को समझने के लिए यह एक प्रामाणिक संदर्भ ग्रन्थ है। सुशाील, सिद्धार्थ, खगेन्द्र ठाकुर, वेद प्रकाश अमिताभ, प्रकाश उदय, मधुरेश, उदयन बाजपेयी, परमानन्द श्रीवास्तव, राज किशोर, लाल बहादुर वर्मा, विजय बहादुर सिंह, गिरिराज किशोर, सुधीश पचौरी, गोपाल राय, राजेन्द्र राव, अभय कुमार दुबे, जवरी मल्ल पारख, क्षमा शर्मा, सत्यकाम, भाषा सिंह, रोहिणी अग्रवाल, साधना अग्रवाल, जितेन्द्र श्रीवास्तव, प्रतीक मिश्र, माधुरी छेड़ा, ऋषभदेव शर्मा, मधुलिका, अर्जुन, चव्हाण, एल0आर0 पाटिल जैसे सुधी आलोचकों की विशिष्टता को रेखांकित करना है वही डॉ0 दया दीक्षित का संपादकीय कर्म ववविध्यपूर्ण आलोचकीय दृष्टियों के संश्लेषण से मैत्रेयी पुष्पा के समग्र रचनात्मक व्यक्तित्त्व को रूपायित करता है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

प्रकाशन

मैत्रेयी पुष्पा स्त्री अस्मिता के महासमर में संघर्ष करने वाली महान योद्धा हैं।

डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह

असि०प्रो०, हिन्दी विभाग,
डी०ए-वी० कॉलेज, कानपुर
(उत्तर प्रदेश)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

किसी एक रचना के माध्यम से रचनाकर को जानने की कोशिश सदा अधूरे सच की ओर ले जाती है। मात्र एक रचना पढ़ी, पूर्वाग्रहों पर जोर से आहत पाठकीय मानसिकता रचनाकार को सदैव कटघरे में खड़ा करती है। मैत्रेयी पुष्पा के साथ भी नहीं हुआ। किन्त समग्रता में विचार और मूल्यांकन से ही एक संवेदनशील रचनाकार को उसके उत्तर दायित्व बोध और गंभीर दाय को समझा जा सकता हें मैत्रेयी पुष्पा बुंदेलाखण्ड क्षेत्र की स्त्रियों के उन तथ्यों को उजागर करती हैं जो महानगरीय चकाचौंध में खोये संसार को अपने समीपवर्ती कथानक सच के अनावृत्त करती हैं। मैत्रेयी पुष्पा न केवल स्त्री संवेदना की रचनाकार है अपितु स्त्री अस्मिता के महासमर में संघर्ष करने वाली महान योद्धा हैं।

सदियों से नारी को एक आर जहाँ समाज में अति विशिष्ट स्थान दिया जाता रहा है और वहीं दूसरी ओर उसे क्रीड़ा-कन्दुक से कुछ अधिक नहीं समझा जा रहा है। इन दो अतियों के बीच नारी की स्थिति सदैव दोलायमान रही। यद्यपि नारी की समाजिक भूमिका सदैव से महत्त्वपूर्ण रही है। तो भी तथ्य नारी के दीन दशा के पक्ष में नहीं रहे। माया ठगिनी जैसे रूपकों से मुक्त होने का स्त्री के लिए यह उपयुक्त समय है। मैत्रेयी पुष्पा जैसे रचनाकारों ने इसके लिए पर्याप्त भूमि निर्मित कर दी है।

नारी समस्या को लेकर लिखी गयी अधिकांश रचनाएँ केवल नारी प्रतिशोध की अभिव्यक्ति बन कर रह जाती है एवं पुरुष सत्ता को चुनौती देने वाले अधिकांश विमर्श स्वयं प्रश्नचिह्न बनकर रहा जाता है। स्त्री अस्मिता की रक्षा के लिए रचनाकारों को अपने साहित्य को प्रतिशोध काम के दायरे से उपर उठाना होगा। और उन प्रश्नों को खड़ा करना होगा जो स्त्री की हीन दशा और उसके शोषण के लिए जिम्मेदार हैं, उसके मूल कारक चाहे स्त्री हो या पुरुष। मैत्रेयी पुष्पा ने उन थोथे नैतिक मूल्य-मान्यताओं को कटघरे में खड़ा किया है। जो स्त्रियों के शोषण के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार है। नि:संदेह मैत्रेयी पुष्पा के रचनात्मक दाय स स्त्री विमर्श की धार तेज हुयी है। समग्रता में सुशील सिद्धार्थ का इस संग्रह में संकलित आलेख 'त्रिया की त्रासदी' की समापक पंक्तियाँ -'एक रचनाकार के रूप में मैत्रेयी स्त्री अस्मिता का जो युद्ध लड़ रही हैं उसकी नैतिकता सर्वाधिक मूल्यवान है', मैत्रेयी पुष्पा के संपूर्ण रचनात्मक दाय को समझने के लिए सर्वाधिक प्रामाणिक सूत्र है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN